पंद्रह

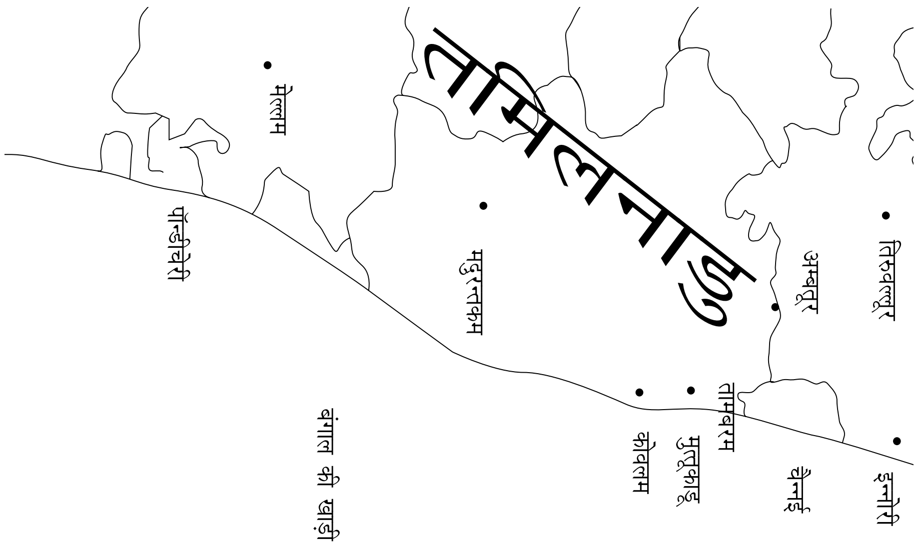

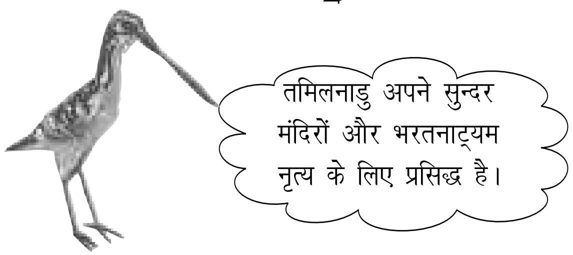

लेखक के बारे में

अम्बई के छद्म नाम से लिखने वाली डा. सी. एस. लक्ष्मी ने तमिल लघु साहित्य में अपने लिए एक विशेष जगह बना ली है। उनकी प्रकाशित रचनाओं में लघुकथाओं की दो पुस्तकें शामिल हैं। सन् १६६५ में अपनी कहानी “अ डियर इन द फॉरेस्ट” के लिए उन्हें कथा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्त्री विषयक अध्यन के क्षेत्र में वह एक प्रसिद्ध अंवेषक हैं।

पंद्रह

अम्बई

की तमिल कहानी पर आधारित

कथा द्वारा संक्षिप्त अनुवाद

सीरीज़ संपादिकाः गीता धर्मराजन

KATHA

प्रथम हिन्दी संस्करण 2008, दूसरा संस्करण 2010
तीसरा संस्करण 2010

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-87649-47-2
कवर चित्राँकन एवं डिज़ाइनः गरिमा गुप्ता
चित्राँकनः एम डी हुसैन एवं दिलिप कुमार मंडल

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्‌देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली ख़ुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4182 9998, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

1

चेल्लम को तेरह साल की उम्र में प्यार हो गया। उसने अपनी चचेरी बहन चम्पकम को इस बारे में बताया, जो उससे दो साल बड़ी थी और चेल्लम की गुरू थी। चम्पकम ने इस संसार में जीवन के बारे में काफ़ी गहराई से चिंतन किया था और अब त्याग का जीवन बिताने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। वह सिर्फ यह तय नहीं कर पाई थी कि क्या छोड़ा जाए और क्यों? हाँ, पिछले कुछ महीनों से वह लगातार शून्य में ताकती रहती और कहती “ओह!, ये कैसा जीवन है!”

कभी-कभी वह कल्पना करती जैसे कि वह एक सुन्दर नन हो और गिरजा घर में वर्जिन मेरी के

सामने प्रार्थना करते हुए उसका चेहरा आध्यात्मिक आभा से चमक रहा हो। उसे यह अनुभव तब होता जब वह इस संसार के साधारण लोगों पर नज़र डालती। उसने सुन रखा था कि अपने असफ़ल प्रेम के कारण ही प्रायः कई लड़कियाँ नन बन जाती हैं।

इसके लिए उसने अपने मस्तिष्क में दुखद प्रेम प्रसंगों की झांकियाँ अंकित कर रखी थीं।

एक प्रेमी। देखने में राजसी सौन्दर्य का धनी। परन्तु बीमारी? कोई और नहीं, टी. बी. से कैंसर तक सभी बीमारियाँ उसे थीं। उसके लिए मृत्यु ही उसकी अन्तिम गति थी! विडम्बना यह थी कि वह अपनी बीमारी के सम्बन्ध में जानता तक नहीं था।

एक दिन वह कई मील चल कर आया और उसका दरवाज़ा खटखटाया। जैसे ही चम्पकम ने दरवाज़ा खोला, वह कठिनाई से इतना ही बोल पाया, “चम्पा!” और उसके सामने ही बेहोश हो गया।

उसका प्रेमी शव के रूप में उसकी बाहों में। ये कैसा जीवन है!

एक और दुखद कल्पना, एक और प्रेमी जिसका नाम कभी जॉर्ज तो कभी सलीम होता। इन दोनों के गहरे प्रेम में समाज

आभाः तेजोमंडल
प्रसंगः किस्सा

की भी दखल रहती। समाज इस बात पर ज़ोर देता कि जॉर्ज को एलिज़ाबेथ और सलीम को कतीजा से विवाह कर लेना चाहिए। चम्पकम और जॉर्ज/सलीम की अंतिम भेंट बहुत ही दुखद थी। चम्पकम के हृदय के हज़ारों टुकड़े हो गए।

उसकी आँखों के आँसू सूख गए थे। उसके चेहरे की मुस्कान लुप्त हो गई। जॉर्ज/सलीम ने वही कायरतापूर्ण लाइनें दोहरा दीं, "हम अपने परिवार के विरोध में नहीं ..."

एक निर्जीव-सी मुस्कान चम्पा के चेहरे पर फूटी। अपनी खिड़की से वह अपने प्रेमी को सड़क पर जाते हुए तब तक देखती रही जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हो गया। फिर उसने एक गहरी साँस ली। जीवन अब अर्थहीन है।

चम्पकम ये सारे सदमे अपने अंदर दबाकर जी रही थी। और ये बेपरवाह दुनिया न कुछ देखती, न कुछ समझती। शायद इसलिए भी कि उसकी इन दुखद कल्पनाओं का उसकी दिनचर्या या असल ज़िन्दगी से कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं था।

बीजगणित (एल्जेब्रा) में उसकी प्रतियोगिता उसकी सहपाठी कल्याणी से थी। और चम्पकम को कभी सौ से कम नम्बर नहीं मिलते। जब अन्य छात्रों के निबंधों का शीर्षक होता – यदि मैं शिक्षक होती, यदि मैं नर्स होती या फिर यदि मैं डॉक्टर होती, चम्पकम के निबंधों का शीर्षक होता – अगर मैं हवाई जहाज़ चालक होती या फिर जब मैं शिल्पकार बनूँगी – ऐसे शीर्षक जो सदमों से पूरी तरह अछूते थे।

यही नहीं, उसने अपने माता-पिता से झगड़ कर अपने लिए एक रेशमी दावणी भी खरीद ली थी।

यदि उसे दोसे खाने दिए जाते तो, वह क्रमशः एक को घी व शक्कर के साथ, एक तीखे लाल मिर्च के पाउडर के साथ, एक प्याज़ की चटनी के साथ और एक अदरक व इमली की चटनी के साथ खाती। इसलिए लोग ना ही समझ सके और ना ही उन्हें अहसास हुआ कि चम्पकम वास्तव में संसार त्याग चुकी है।

दावणीः दुपट्टे समान ओढ़ने वाला वस्त्र

वे उसे छोटे-छोटे कामों में उलझाए रखते, जैसे खाने का स्थान पोंछना, दही बिलोना, प्याज़ साफ़ करना, कॉफी के बीजों को पीसना। और वह किसी तरह यह सब सहती रहती।

इसी समय की बात है जब चेल्लम ने चम्पकम को अपने प्रेम सम्बंध के बारे में बताया। ये सुनते ही चम्पकम के चेहरे पर एक दुःखद मुस्कान बिखरी और वह बोली, "ये कैसा जीवन है!"

चेल्लम खामोश रही।

कुछ समय पश्चात चम्पकम ने पूछा, "वह कौन है?"

"वरदन"

"कौन वरदन?"

"कालीवरदन। राधा टीचर का बेटा।"

कालीवरदन अठारह वर्ष का था। अपनी स्कूली शिक्षा मद्रास से पूरी करने के बाद, वह उसी शहर के कॉलेज में शिक्षा ग्रहण कर रहा था।

चेल्लम उसकी माँ से ट्यूशन पढ़ती थी। जब वह पढ़ती, वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद खाँसता रहता। धीरे-धीरे चेल्लम को भी खाँसी के दौरे पड़ने लगे। जो ठीक उसी समय गायब हो जाते जब राधा टीचर पानी का गिलास लेने अंदर जातीं और

कह जातीं, "वरदू, इसे बताना यह सवाल कैसे करते हैं।"

एक दिन उसने चेल्लम के डेस्क पर पड़ा हुआ गुलाब के फूल से कढ़ा रुमाल उठाया, अपने ओंठों से छुआ और दिल से लगा लिया।

चेल्लम उसके प्यार की गहराई देखकर हक्की-बक्की रह गई। वरदन के मुँहासों भरे चेहरे पर प्यार के भाव पढ़ना मुश्किल था, पर उसकी हरकतों से चेल्लम उसके मनोभावों को पूरी तरह समझ गई।

2

एक बार वरदन ने एक चित्र बनाया। एक चेहरा। आधे भाग में आँख, बिंदी का कुछ भाग, आधी नाक और मुँह का सिरा। शेष आधा भाग खाली था।

चेल्लम ने उससे पूछा, “तुमने चित्र पूरा क्यों नहीं किया?”

“यह मॉडर्न-आर्ट है। इसमें अनेक प्रकार के प्रतीक होते हैं। तुम्हें अभी यह समझ में नहीं आएगा,” उसने कहा।

चेल्लम ने उसकी आँखों में ध्यान से झाँका। वह कितना चतुर था!

एक बार उसने एक कविता लिखी। एक तमिल कविता। चेल्लम और चम्पकम दोनों ने कन्नड़ और हिन्दी स्कूल में ही सीखी थीं। वे तमिल भी जानती थीं। दोनों यह भी मानती थीं कि कविता लिखना बहुत ही कम लोगों के बस की बात है। जो एक ख़ास दुनिया में रहते हैं, वे ही लिख सकते हैं। चेल्लम को कविता पसंद आई। चम्पकम को भी मानना पड़ा कि वह बहुत बुरी नहीं थीः

दिल लाख छुपाए बात,
चेहरा, आईने की
तरह, बता देता है।

कालीवरदन ने कविता के चारों ओर चित्रकारी की हुई थी। एक ओर तीर चुभे दिल का चित्र था तो दूसरी ओर एक पैर जो सीधा, बिना आकार के, एक खम्बे-सा था। पैर के नीचे एक पायल, जिसके बारे में यदि पता न हो तो कोई भी उसे फिलेरिया का चित्र समझ सकता था।

पर चेल्लम नहीं।

वह कविता का उत्तर देना चाहती थी, इसीलिए उसने चम्पा की सहायता माँगी। उसे चम्पा के तमिल ज्ञान तथा सांसारिक अनुभवों पर अटल विश्वास था। अंततः पत्र तैयार हुआ।

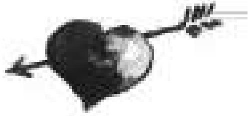

ओह! चोर
तुम जो दिल चुराना चाहते हो,
एक चोर ही हो
तुम्हारी कविता ने
मेरा दिल छू लिया है, पर
फिर भी मैं अकेली हूँ,
एक फूल हूँ जो भँवरे की उपेक्षा करे
एक फूल जो नन की तरह
यीशू को समर्पित है।

ननः योगिन, भक्तिन
उपेक्षाः तिरस्कार, निरादर, अवहेलना

"कौन कहता है मैं नन बनने वाली हूँ? वह तो तुम हो!" चेल्लम ने कहा।

"कोई भी हो सकती है, इससे क्या फ़र्क पड़ता है? यह तो केवल पत्र ही है। वैसे भी, बिना किसी दुःखद घटना के प्यार नहीं हो सकता," चम्पकम ने उस पर धौंस जमाई। कालीवरदन का पत्र निश्चित ही दुःखांत था –

प्रिय प्यार,
यदि तुम नन बनने वाली हो तो मेरे जीवन का कोई अर्थ नहीं है। मेरे प्यार की कसम, मैं ऐसे अर्थहीन जीवन का अन्त कर दूँगा!

चेल्लम बहुत चिन्तित हुई। "क्या मैं उसे बता दूँ? कहीं वह मर गया तो?"

चम्पकम ने उसे ढाढ़स बँधाया और दूसरा पत्र लिखवायाः

मेरे मित्र,

यदि नन नहीं भी बनूँ, तब भी मैं एक अकेली फूल ही हूँ। मैं अपना जीवन उसको समर्पित करना चाहती हूँ जो मुझे ह्रदय की गहराईयों से चाहता है। वह अच्छा है, वह बुद्धि मान है। मगर अफसोस, वह अपना पुरुषत्व खो चुका है।

ऐसा एक दुर्घटना के कारण हुआ। यदि मेरे परिवार के लोग इसका विरोध करेंगे, तो मैं नन बन जाऊँगी। पर तुम, एक कलाकार

और कवि, अपने लिए एक उचित लड़की ज़रूर ढूंढ़ लोगे।

“पुरुषत्व खो चुका है, इसका क्या मतलब है” चेल्लम ने पूछा?

सच यह था कि चम्पकम को भी नहीं पता था। सिवाय इसके कि यह एक बहुत बड़ी कमी है।

3

प्रत्येक रविवार उसके पिता अकेले सिनेमा देखने जाते थे। कभी-कभी वे चमपकम को भी ले जाते थे। इसी प्रकार उसने सारदा को देखा था। फिल्म में हीरो एस. एस. राजेन्द्रन बुरी तरह गिर पड़ा। उसके हाथ-पैर तो नहीं टूटे, परन्तु उसका पुरुषत्व खो गया। सारदा के रूप में विजया कुमारी सारी रात अपने सिर पर ठंडा पानी डालती रही, प्रायश्चित के लिए। उसके दूसरे विवाह का प्रबंध किया गया, और अन्त में उसने अपने पति के चरणों में प्राण त्याग दिए।

चम्पकम पर इस फिल्म का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसने स्नान घर में जाकर कई बार मरने का

अभ्यास किया जिसमें वह नमस्कारम की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़कर ज़मीन पर सीधी लेट जाती। एक पुरुष के लिए अपने प्राण देना, और वह भी उसके लिए जो अपना पुरुषत्व खो चुका हो!- वह कितना बड़ा परित्याग होगा! वैसे भी दिन में कई बार ठण्डे पानी के स्नानों से उसे कोई आपत्ति नहीं थी।

इस सब का प्रेम पत्रों पर काफ़ी प्रभाव पड़ रहा था। कालीवरदन का उत्तर सचमुच बहुत दयनीय थाः

> तुम्हारा यौवन जंगल में चाँदनी की तरह व्यर्थ हो जाए यह मैं नहीं देख सकता। वह कौन खलनायक है जो अपना पुरुषत्व खो चुका है पर तुम्हारा ऐसे उपयोग करना चाहता है? उसे प्रेम करने का अधिकार ही क्या है? जो तुम करना चाह रही हो वह अपने आप को उम्र कैद देने के बराबर है। प्रियतमा, मैं तुम्हें पुष्प समान मानूँगा। रेगिस्तान में चलने का चुनाव न करो!

चेल्लम से सहा न गया। उसने चम्पकम से फिर पूछा, “जब पुरुष अपना पुरुषत्व खो देते हैं, तो आख़िर होता क्या है?”

कुछ विचार-विमर्श के बाद, उन्होंने कात्यायनी से पूछने का निर्णय लिया।

कात्यायनी चम्पकम की सहपाठिनी थी। उसके माता-पिता एक भी तमिल फिल्म नहीं छोड़ते थे। रहा उसकी सहेलियों का सवाल, तो उन्हें अगले दिन फिल्म के सविस्तार वर्णन से ही संतोष करना पड़ताः "फिर उसने उसे यूँ देखा ... वह अपने होठों को यूँ कर रही थी। फिर उसने उस पर एक गुलाब फेंका। उसने गुलाब दोनों हाथों से यूँ पकड़ा, बिल्कुल अपने सीने के ऊपर, ठीक ऐसे। फिर एक गाना। वह अचानक उसके पास आया और उसकी कमर को यूँ छुआ ... बिलकुल यहाँ। फिर वह उस पर झुक गई ..."

कात्यायनी, जो आप भी उनकी तरह अंधकार में थी, सोचने लगी कि अब वह इस प्रश्न से कैसे जूझे।

फिर उसके मामा का विवाह हो गया। बिलकुल उचित समय पर। हर नवविवाहित जोड़ी की सुहागरात पहली मंज़िल के कोने वाले कमरे में बिताई जाती थी। उस कमरे के साथ एक स्नानघर जुड़ा था। चेल्लम ने सोचा कि इस प्रकार ठण्डे स्नान लेना सरल था, ठीक जैसे चम्पा ने कहा था।

उस कमरे के एक कोने में किताबों की एक अलमारी थी।

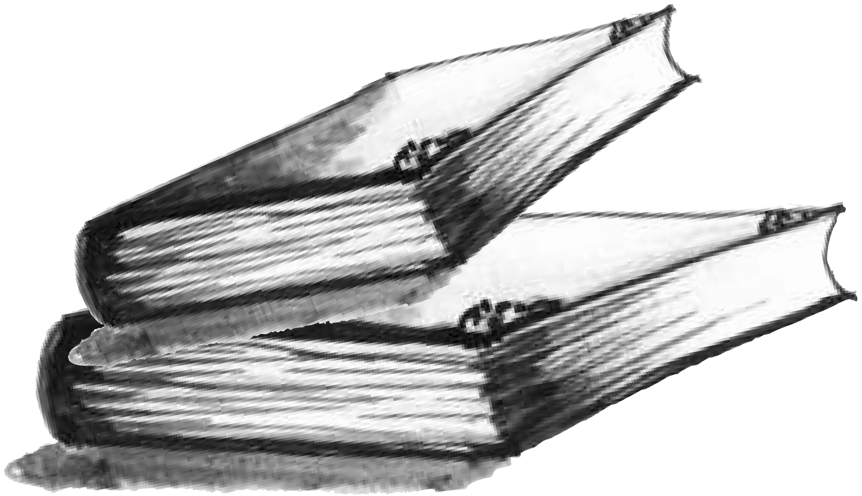

4

जब घर के सभी लोग विवाह के पकवान बनाने में व्यस्त थे, तब कात्यायनी ने उस कमरे पर धावा बोल डाला। अलमारी में तीन नई किताबें थीं, और एक में तो चित्र भी थे। बस उसने यही वाली चुरा ली और स्कूल ले आई।

उन दोनों से छोटी होने के बावजूद, चेल्लम को भी किताब देखने की अनुमति दे दी गई।

तीनों ने कहा कि अब वे थोड़ा-थोड़ा समझ पा रहे थे कि "पुरुषत्व खोने" का क्या मतलब होता है। एक तरह से उन्हें यह भी समझ में आ गया कि इस सब का बच्चे पैदा होने से भी कुछ सम्बन्ध था। अब यह तथ्य काफ़ी उलझ गया था और इस पर और खोज करने की आवश्यकता थी।

बैंगलोर में मल्लेश्वरम में एक नया मोबाइल पुस्तकालय आया था। वहाँ बड़ी मेहनत के बाद, कात्यायनी को पुस्तकों से भरी दीवार की तीसरी पंक्ति के कोने में वह मिल गया जिसकी उन्हें खोज थी। उसी शाम उन तीनों ने पतली बैन्चों पर बैठ जल्दी-जल्दी तीनों पुस्तकें पढ़ डालीं।

उन किताबों में हर अध्याय के अजीब-अजीब विषय थे। उन्हें उसका विवरण तो नहीं मिला जिसकी उन्हें खोज थी, पर लगा कि इतना समझ में आ गया है कि विवाहित स्त्री और पुरुष चौबीसों घण्टे "प्रेम" में डूबे रहते हैं।

चेल्लम को विश्वास नहीं हुआ कि उसके माता-पिता ऐसा कुछ कर सकते हैं। चम्पा किसी ठोस निर्णय तक नहीं पहुँच सकी।

कात्यायनी ने इस सब को बड़े दार्शनिक तरीके से लिया। एक दिन, स्कूल से घर लौटने के रास्ते वह बोली, "जब तुम्हारा विवाह होगा, तब ऐसा ही होगा। तुम्हें हर रोज़ कम से कम सौ चुम्बन मिलेंगे।"

उसने पिछले दिन ही मामा को अपनी पत्नी को सीढ़ियों के नीचे अंधेरे में खींचकर चुम्बन देते देखा था। उसने हर चुम्बन में लगने वाला समय, साथ में

मामा-मामी को मिलने वाले एकान्त समय के पलों को जोड़ा था। यदि हर चुम्बन पाँच मिनट लम्बा था, और यदि वे हर दिन आठ घंटे साथ बिताते, तो - मामा के ऑफिस के घण्टों को छोड़कर- पूरे सौ घण्टों का हिसाब था।

"सौ!" चेल्लम बोली।

"शायद इससे ज़्यादा भी हो सकता है," कात्यायनी बोलती गई। चेल्लम की चाल में अजीब-सी थकान आ गई।

इधर चम्पकम ने जो चेल्लम के लिए प्रेम पत्र लिखे थे, वे अब दुख की चरम सीमा पर पहुँच गए थे। एक फूल से अब वह एक पक्षी बन गई थीः

मैं अकेली पंछी हूँ
मैं उड़ती हूँ अपने प्रेमी का बोझ लिए
यह मेरी किस्मत है।

उत्तर में कालीवरदन का पत्र करुण धारा की तरह बह निकला।

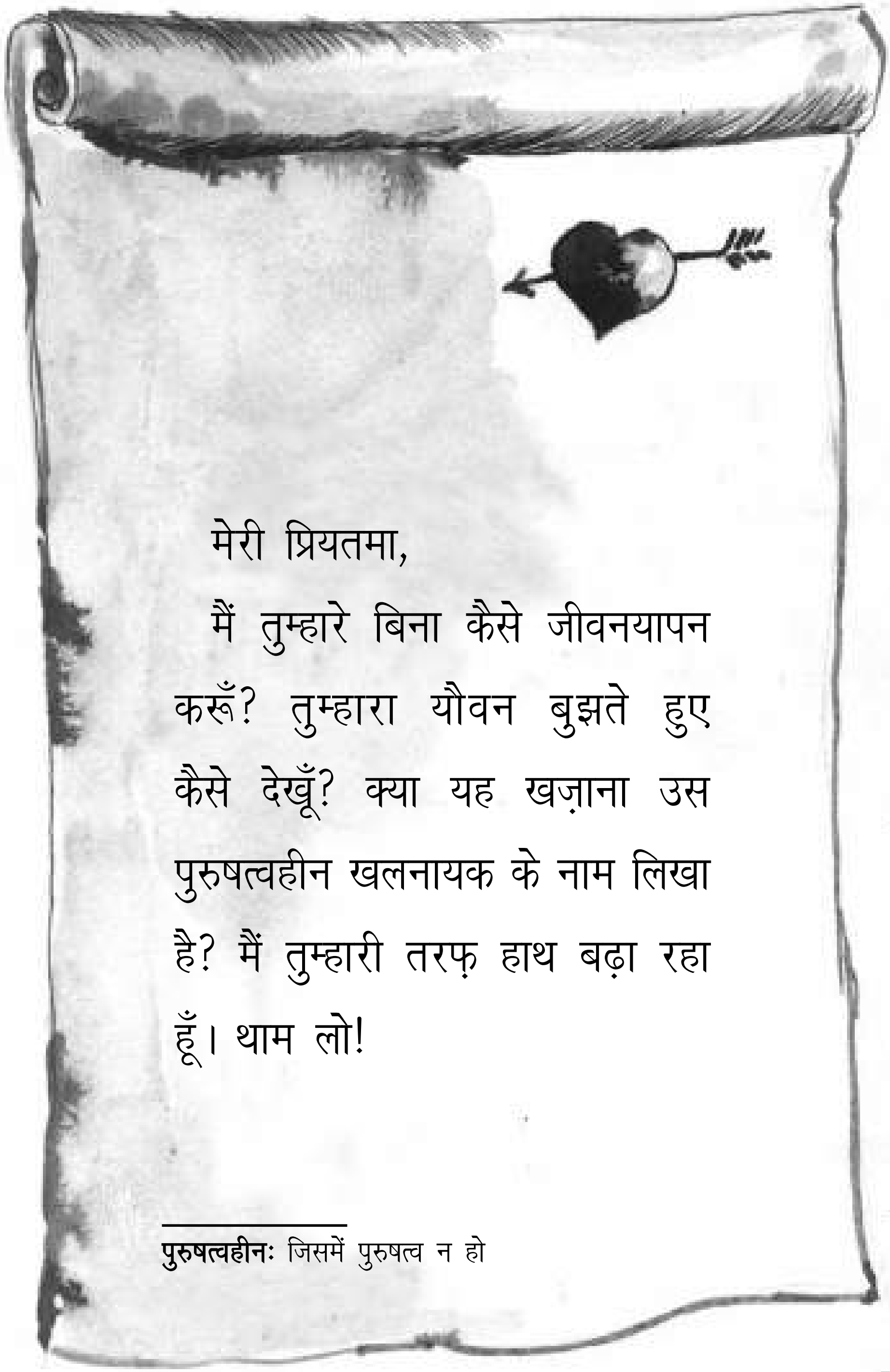

मेरी प्रियतमा,

मैं तुम्हारे बिना कैसे जीवनयापन करूँ? तुम्हारा यौवन बुझते हुए कैसे देखूँ? क्या यह खज़ाना उस पुरुषत्वहीन खलनायक के नाम लिखा है? मैं तुम्हारी तरफ़ हाथ बढ़ा रहा हूँ। थाम लो!

पुरुषत्वहीनः जिसमें पुरुषत्व न हो

5

इस समय, जब यह पत्राचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था, तब उनके जीवन में वासुदेवन ने कदम रखा।

वासुदेवन नया बावर्ची था। उसकी लड़कियों से अच्छी दोस्ती हो गई। एक तो उसके पकाने के तरीके की वजह से। दूसरा उसकी अन्य गतिविधियों से – वह तमिल में दोहरे मतलब वाले शब्दों में गाता था, “मैं इस संगतमन पकाने को छोड़ संगीतम (गाने) को पकड़ लूँगा।”

वह एक कलाकार भी था। तमिल सिनेमा के महान अभिनेता एम. आर. राधा का प्रशंसक था।

भर्राईः भावुक (भावनाओं से भरी)
संगतमनः परेशान करने वाला

शनिवार की दोपहर, खाने के बाद, वह भर्राई आवाज़ में दर्द से भरी पंक्तियाँ दोहराता। झुककर, भौंहे सिकोड़कर सिर हिलाकर कहता, “शान्ति? मेरे लिए?”

वासुदेवन का कहना था कि उसने प्रेम में सब कुछ गँवा दिया था। वह कहता था कि प्रेम जैसा बेकार और व्यर्थ और कुछ भी नहीं। फिर भी, शामों को जब उनके माता-पिता बाहर जाते, वह उनके लिए गाता, “जब मैं दुखी होता हूँ, और तुम बंसी उठाते हो ...”। फिर जब वह “क्या तुम थिरूक्कुरल का एक छन्द मेरे लिए नहीं बोलोगे?” लाईन तक पहुँचता, तब उसकी आवाज़ हमेशा उखड़ जाती।

तो उन्हें ऐसा लगा कि वह सही विशेषज्ञ है जिससे वे सलाह ले सकते थे। उन्होंने उसे कालीवरदन की कविता दिखाई। वासुदेवन ने अपना होंठ काट लिया। उसने बताया कि यह सिनेमा के एक गीत का भाग था जिसे किसी मरूताकासी ने लिखा था। जिसका कालीवरदन से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता था।

लड़कियों ने सोचा भी न था कि कालीवरदन इतना झूठा हो सकता है। यह जानकर उन्हें बेहद अफसोस हुआ कि वह उस प्रेम कविता में झूठ बोल सकता है।

अगले सप्ताह कालीवरदन ने चेल्लम को कविताओं की किताब दी। उस वक्त चम्पकम उसके साथ थी। वे सड़क के कोने वाले बस स्टैण्ड पर खड़ी थीं। उसने कहा कि ये कविताएँ उसने चेल्लम के लिए लिखी थीं।

थिरूक्कुरलः तमिल कवि थिरूवल्लूवर की सबसे जानी-मानी किताब

चेल्लम ने उसकी किताब फेंक दी। कालीवरदन सकपका गया। वह झुका, किताब उठाई और दोबारा उसे दे दी। उसके ऊपर एक लड़की का चित्र बना था। लड़की की चोटी उसके बाएँ कंधे पर सामने लटकी हुई थी। उसका हाथ ठोड़ी के नीचे था, और वह कुटिलता से शर्मा रही थी। चम्पकम को लगा, बिल्कुल कौए जैसे। उसने चेल्लम को कोहनी मारी। चेल्लम ने किताब फाड़कर टुकड़े नीचे फेंक दिये।

कालीवरदन का चेहरा फीका पड़ गया। उसके होंठ काँपने लगे। वह टुकड़े बटोरने के लिए नीचे झुका। सिसकियाँ-सी भरते हुए बोला, "मैं मर जाऊँगा," और चला गया।

चेल्लम और चम्पकम ने उसके मौत की खबर की प्रतीक्षा की, कुछ डर और कुछ उत्सुकता से। उन्होंने बहुत बहस की कि वह किस तरह मरेगा।

पर इसमें भी कालीवरदन ने उन्हें निराश कर दिया। वह मरा ही नहीं। यही नहीं, चेल्लम ने एक दिन उसे उनकी सड़क पर चलते देखा, चेहरा दमकता हुआ, जिसमें शर्म का नामोनिशान तक न था। इससे वह बहुत परेशान हो गई। उसे एक पुरुष का प्रेम में लटककर मर जाने का ख़्याल ज़्यादा अच्छा लगता था।

समय गुज़रा तो चम्पकम को लगने लगा कि असल में वह और कालीवरदन प्रेमी थे। उसने कल्पना की कि उसका शव विभिन्न मुद्राओं में लेटा है। बेचारा! उसका शव भी देखने में अच्छा था।

सकपका: बौखला

कुटिल: चालाक

लगा कि इससे दुःखद क्या हो सकता है कि उसके लिए कोई लटककर प्राण दे दे। और उसे समझ आ गया कि आखिरकार, एक सच्चा दुःखांत भार उसके कंधों पर आ बैठा है, और अब उसके सामने कोई राह नहीं है, सिवाय संसार त्यागने के।

नीचे दिये पाँच शब्दों के साथ अपने सपने बुनो, उन्हें लिखो, अपनी कल्पना साकार करो। इनके अतिरिक्त तुम और क्या-क्या बनना चाहोगे, यह भी लिख सकते हो।

डॉक्टर

नर्स

पायलट

शिल्पकार

अध्यापक

नीचे दिये नई-पुरानी बीमारियों के नाम, उनके फैलने के कारण और उनसे बचाव के साधन लिखो।

स्वास्थ्य अच्छा होना भगवान की देन नहीं है। ना ही किस्मत की बात है। यह तो इंसानों की बनाई व्यवसायिक तरीकों का नतीजा है। फिर लोग बीमार क्यों पड़ते हैं?

मलेरिया

डेंगू

कैंसर

हैजा

चिकनगुनिया

टी.बी. और किस नाम से जानी जाती है? टी.बी. होने के कारण और उससे बचने के उपाय ढूँढो और लिखो।

एक बात बताओ, अधिकतर बीमारियों की शिकार औरतें ही क्यों होती हैं?

बर्डफ्लू

पीलिया

निमोनिया

क्या कहती है कहानी?

कितने सवालों के साथ आती है युवावस्था। सवाल, जिनके जवाब ढूँढने चेल्लम और चम्पकम दोनों को भारी पड़े।

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।

इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

युवकथा की अन्य दिलचस्प किताबें!

कितने सवालों के साथ आती है युवावस्था। सवाल, जिनके जवाब ढूँढने चेल्लम और चम्पकम दोनों को भारी पड़े।

छोटे-बड़े बच्चों के लिए
एक कथा की किताब
ISBN 978-81-87649-47-2
www.katha.org
रु. 65/-